स्तन कैंसर की जल्द पहचान बचा सकती है ज़िंदगी

मैं सोचती थी कि मैं कैंसर से डरती हूं लेकिन मैंने जाना कि ऐसा नहीं था।'' ये शब्द हैं अमेरिकी राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड की पत्नी जीनी मल्फ़र्ड के। वह 25 अक्टूबर को स्तन कैंसर से जूझकर बचने में सफल रहीं महिलाओं के साथ एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रही थीं। श्रीमती मल्फ़र्ड इस बीमारी से अपने संघर्ष के बारे में पहली बार सार्वजनिक रूप से बोल रही थीं।

उन्होंने अपनी पसंद, सर्जरी, बालों के झड़ने, स्तनों के फिर से सफलतापूर्वक आकार लेने, भारत में उन्हें और उनके परिवार को मिले समर्थन, बीमारी से उबरने और इस सब में मिली सीख के बारे में चर्चा की।

उन्होंने कहा, ''मैंने यह जाना कि यदि मैं स्तन कैंसर के बारे में खुलकर बोलूं, जैसा कि मैंने आज किया है और एक महिला भी शुरुआती अवस्था में ही अपने स्तनों की कैंसर के लिहाज से जांच कराने को प्रेरित हो जाए तो यह मेरे यहां आने के हर मिनट का सदुपयोग होगा।''

श्रीमती मल्फ़र्ड के मामले में कैंसर का पता सालाना मैमोग्राम टेस्ट से लगा। शुरुआती अवस्था में स्तन कैंसर का पता लगने पर हर 10 में से 9 महिलाएं बच पाती हैं। नई दिल्ली के संवाददाता सम्मेलन में कैंसर से जूझने वाली और अपनी ज़िंदगी बचा पाने वाली दो भारतीय महिलाओं ने भी यही संदेश दिया। ये हैं फ़ैबइंडिया टेक्सटाइल कंपनी की मालिक बिम बिसेल और मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल के वीमेन्स कैंसर इनिशिएटिव की वाइस प्रेसिडेंट देविका भोजवानी। उन्होंने मैमोग्राम कराने के बारे में अपने डॉक्टर की सलाह मानी और ज़िंदगी बचाने में सफल रहीं। पिछले साल भारत में स्तन कैंसर के 79,000 नए मामलों का पता लगा।

हेमंत भटनागर

RNI–DELHIN/2003/9334 के अंतर्गत पंजीकृत